Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies,
Online ISSN 2278-8808, SJIF 2021 = 7.380, www.srjis.com
PEER REVIEWED & REFEREED JOURNAL, MAR-APR, 2022, VOL- 9/70

भारत में माध्यमिक शिक्षा प्रणाली एक विश्लेषण

मनोज कुमार सिंह
असिस्टेंट प्रोफेसर (बी.एड.), राठ महाविद्यालय, पैठानी, पौड़ी गढ़वाल, उत्तराखण्ड

Paper Received On: 25 APR 2022
Peer Reviewed On: 30 APR 2022
Published On: 1 MAY 2022

Abstract

प्रस्तुत लेख भारत में माध्यमिक शिक्षा प्रणाली पर किये गए शोध पर आधारित है। यह लेख माध्यमिक शिक्षा प्रणाली पर शिक्षा आयोगों द्वारा दिये गये सुझावों को ध्यान में रखते हुए उसकी कार्य प्रणाली तथा प्रणाली में सुधार को लेकर केंद्रित हैं ।

मुख्य बिंदु- माध्यमिक शिक्षा प्रणाली, अर्थ और विशेषताएं ।

Scholarly Research Journal's is licensed Based on a work at www.srjis.com

प्रस्तावना- भारत वर्ष में माध्यमिक शिक्षा देश की शिक्षा का अत्यन्त ही महत्वपूर्ण स्तर है। यह वह स्तर है जो माध्यमिक शिक्षा व उच्च शिक्षा के मध्य एक पुल का कार्य करता है व दोनों को जोड़ता है सामान्यत: इस स्तर पर पढ़ने वाले छात्र किशोरावस्था के होते हैं। इसलिए इस अवस्था का महत्व और भी बढ़ जाता है। माध्यमिक शिक्षा ऐसा केन्द्र बिन्दु है, जो प्राथमिक शिक्षा व विश्वविद्यालयी शिक्षा के बीच सम्बन्ध स्थापित करता है। सम्पूर्ण शिक्षा प्रणाली तथा मानव जीवन में माध्यमिक शिक्षा इतना महत्व होते हुए भी यह आज तक अनेक दोषों से ग्रसित रही है। माध्यमिक शिक्षा के दोषों की ओर संकेत करते हुए प्रो. के.जी. सैयदन लिखते हैं- सारे संसार के शैक्षणिक क्षेत्रों में माध्यमिक शिक्षा के आम ढर्रे के प्रति गहरा असंतोष रहा है और वे काफी समय से यह अनुभव करते रहे हैं कि उसकी आमूल पुनर्रचना तत्काल आवश्यक है। यद्यपि प्राथमिक शिक्षा के क्षेत्र में बहुत से बहुमूल्य परिवर्तन हुए हैं और स्वयं हमारे देश में बुनियादी शिक्षण पद्धति ने उसकी समस्याओं के प्रति एक बिल्कुल ही नया रवैया अपनाया है, पर माध्यमिक शिक्षा अभी कुछ समय से पहले तक कुल मिला- अब प्रश्न है कि माध्यमिक शिक्षा किसे कहते हैं ? अर्थात् इसका क्या अर्थ है? इसका उत्तर हम कई प्रकार से दे सकते हैं। कर गतिहीन व अपरिवर्तित रही है।

Copyright © 2022, Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language

माध्यमिक शिक्षा का अर्थ- स्कूली शिक्षा को प्राय: तीन भागों में बाँटा जाता है- प्री प्राइमरी शिक्षा, प्राइमरी शिक्षा व सेकण्डरी शिक्षा। ये तीनो स्तर व्यक्ति की तीन अवस्थाओं के साथ संबंधित है। प्री-प्राइमरी शिक्षा शैशवकाल के साथ संबंधित है। प्राइमरी शिक्षा बचपन के साथ संबंधित है और सैकण्डरी शिक्षा के किशोरावस्था के साथ संबंधित मानी जाती है। स्पष्ट है कि प्री-प्राइमरी व प्राइमरी शिक्षा के पश्चात् जिस शिक्षा की व्यवस्था होती है उसे सैकण्डरी शिक्षा कहते है। एस.एन.मुखर्जी ने माध्यमिक शिक्षा को तीन भागों में विभाजित किया है-

1. **स्थिति के रुप में** - माध्यमिक शिक्षा वह शिक्षा है तो प्राथमिक शिक्षा के बाद आती है।
2. **प्रकार के रुप में** - माध्यमिक शिक्षा वह है जिसका संबंध निश्चित व बौद्धिक वस्तुओं के विभाजीकरण से है। इसके तीन रुप होते हैं-(1) भ्रमित नाम, (2) मानवीयता तथा (3) उदार शिक्षा
3. **स्तर के रुप में**- माध्यमिक शिक्षा वह शिक्षा है जिसे हम बौद्धिकता की कसौटी कह सकते हैं। क्योंकि किसी पर विश्वविद्यालयी शिक्षा आश्रित है। सामान्य रुप से माध्यमिक शिक्षा वह शिक्षा है जिसमें कक्षा 6 से 12 तक की शिक्षा की व्यवस्था होती है। कुछ राज्यों में कक्षा 11 व 12 को हायर सैकण्डरी भी कहा जाता है, परन्तु कुछ भी कहा जाय वह माध्यमिक शिक्षा के ही भाग हैं। कोठारी शिक्षा आयोग की दृष्टि से माध्यमिक शिक्षा का अर्थ वर्षों में व्यक्त किया है। कोठारी शिक्षा आयोग के अनुसार 7,8 वर्ष तक की प्राइमरी शिक्षा होती है और उसके बाद 4 या 5 वर्ष की माध्यमिक शिक्षा होती है।
4. **माध्यमिक शिक्षा प्रणाली का अर्थ**- माध्यमिक शिक्षा देश के शैक्षिक पैटर्न में एक बहुत ही रणनीतिक स्थान रखती है। यह प्राथमिक शिक्षा और उच्च शिक्षा के बीच की कड़ी है। प्राथमिक शिक्षा का उद्देश्य जीवित रहने के लिए न्यूनतम आवश्यकताएं प्रदान करना है, जबकि माध्यमिक शिक्षा एक व्यक्ति को जटिल समाज का पूर्ण सदस्य बनने में सक्षम बनाती है। स्वतंत्रता के बाद हमारे देश ने माध्यमिक शिक्षा के क्षेत्र में एक महान उल्लेखनीय परिवर्तन हासिल किया। भारत सरकार ने स्वतंत्रता प्राप्ति के तुरंत बाद माध्यमिक शिक्षा प्रणाली की समीक्षा के लिए कई समितियों और आयोगों की नियुक्ति की । विभिन्न समितियों ने माध्यमिक शिक्षा में मात्रात्मक और गुणात्मक दोनों तरह से सुधार के लिए कुछ सुझावों की सिफारिश की। तारा हस्त समिति ने 1948 में गैर-उद्देश्यीय विद्यालयों को हतोत्साहित किए बिना बहुउद्देशीय प्रकार के माध्यमिक विद्यालयों का सुझाव दिया। डॉ. एस. राधाकृष्णन की अध्यक्षता में नियुक्त विश्वविद्यालय शिक्षा आयोग 1948-49 ने टिप्पणी की कि "हमारी माध्यमिक शिक्षा हमारी शैक्षिक मशीनरी की सबसे कमजोर कड़ी है और इसमें तत्काल सुधार की आवश्यकता है।" भारत की माध्यमिक शिक्षा के पुनर्निर्माण में मील का पत्थर माध्यमिक शिक्षा आयोग की रिपोर्ट 1952-53 है।

Copyright © 2022, Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language

माध्यमिक शिक्षा में मौजूदा दोषों की समीक्षा करने और माध्यमिक शिक्षा में सुधार के संबंध में कुछ सुझाव देने के लिए डॉ. ए. लक्ष्मणस्वामी मुदलियार की अध्यक्षता में भारत सरकार द्वारा 23 सितंबर 1952 को आयोग का गठन किया गया था।

माध्यमिक शिक्षा के उद्देश्य

स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद माध्यमिक शिक्षा के उद्देश्यों के संबंध में विभिन्न समितियों ने अपने बहुमूल्य सुझाव दिए हैं।

माध्यमिक शिक्षा आयोग (1952-53) के अनुसार माध्यमिक शिक्षा के उद्देश्य

1. शिक्षार्थी के बीच सर्वांगीण विकास लाना।
2. देश के युवा वर्ग को अच्छे नागरिक बनने के लिए प्रशिक्षित करना जो देश के सामाजिक और आर्थिक विकास में प्रभावी ढंग से अपनी भूमिका निभाने में सक्षम होंगे।
3. छात्रों के सामाजिक गुणों, बौद्धिक विकास और व्यावहारिक कौशल को बढ़ावा देना।
4. छात्रों के चरित्र को प्रशिक्षित करना ताकि वे उभरती सामाजिक व्यवस्था में नागरिकों के रूप में रचनात्मक रूप से भाग ले सकें।
5. छात्रों की व्यावहारिक और व्यावसायिक दक्षता में सुधार करना।
6. वस्तुनिष्ठ रूप से सोचने के लिए वैज्ञानिक दृष्टिकोण विकसित करना।
7. अपने साथियों के साथ सामंजस्य और कुशलता से जीने के लिए आवश्यक गुणों को विकसित करना।
8. कलात्मक और सांस्कृतिक रुचियों का विकास करना जो विद्यार्थियों के सर्वांगीण व्यक्तित्व के आत्म-अभिव्यक्ति और विकास के लिए आवश्यक हैं।

भारतीय शिक्षा आयोग (1964-66) के अनुसार माध्यमिक शिक्षा के उद्देश्य-

1. मुख्य उद्देश्य "हमारे लोगों के जीवन स्तर को ऊपर उठाकर राष्ट्रीय पुनर्निर्माण" है।
2. शिक्षा एक आधुनिक लोकतांत्रिक और समाजवादी समाज की जरूरतों को पूरा करने के लिए है।
3. यह उत्पादकता को बढ़ावा देगा।
4. यह सामाजिक और राष्ट्रीय एकता को मजबूत करेगा।
5. यह जीवन के एक तरीके के रूप में अपनाने के लिए लोकतंत्र को मजबूत करेगा।
6. यह आधुनिकीकरण की गति को तेज करेगा।
7. यह छात्रों को स्कूल, घर, कार्यशाला, फार्म और कारखाने आदि में उत्पादक कार्यों में भाग लेने में सक्षम बनाएगा।
8. इससे छात्रों में सामाजिक, नैतिक और आध्यात्मिक मूल्यों का विकास होगा।

Copyright © 2022, Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language

भारतीय शिक्षा आयोग की सिफारिशों के अनुसार, देश के आर्थिक और सांस्कृतिक विकास के लिए शिक्षा का पुनर्निर्माण किया गया था। शिक्षा को विद्यार्थियों की वास्तविक जीवन स्थितियों से जोड़कर माध्यमिक शिक्षा के गुणात्मक विकास को महत्व दिया गया। एनपीई, 1986 और संशोधित एनपीई, 1992 ने सामान्य रूप से शिक्षा के उद्देश्यों और उद्देश्यों के बारे में चर्चा की है, जिनमें से कुछ माध्यमिक शिक्षा के लिए प्रासंगिक हैं।

1. माध्यमिक शिक्षा अनिवार्य रूप से सर्वांगीण विकास, भौतिक और आध्यात्मिक के लिए है।
2. यह अर्थव्यवस्था के विभिन्न स्तरों के लिए जनशक्ति विकसित करता है, अंततः आत्मनिर्भरता को बढ़ावा देता है।
3. यह शिक्षार्थियों के बीच अच्छी नागरिकता की भावना विकसित करता है।
4. यह छात्रों के बीच लोकतांत्रिक मूल्यों, अधिकारों और कर्तव्यों को एक लोकतांत्रिक व्यवस्था में विकसित करेगा।
5. यह "एक परिवार के रूप में पूरी दुनिया" को मजबूत करेगा और युवा पीढ़ियों को अंतर्राष्ट्रीय सहयोग और शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व के लिए प्रेरित करेगा।
6. इसे न केवल पहुंच में, बल्कि सफलता की स्थितियों में भी सभी के लिए शैक्षिक अवसर की समानता प्रदान करनी चाहिए।
7. यह बच्चों में वैज्ञानिक स्वभाव और मन की स्वतंत्रता को विकसित करेगा।
8. सीखने के न्यूनतम स्तर (एमएलएल) निर्धारित किए जाएंगे और छात्रों में लोगों की विविध सांस्कृतिक और सामाजिक प्रणालियों की समझ को बढ़ावा देने के लिए आवश्यक कदम उठाए जाएंगे।
9. यह छात्रों के बीच शारीरिक शिक्षा के माध्यम से शारीरिक स्वास्थ्य को विकसित करने में सक्षम बनाता है।

इनके अलावा, माध्यमिक शिक्षा एक राष्ट्रीय पाठ्यचर्या के ढांचे पर आधारित होनी चाहिए जिसमें अन्य घटकों के साथ एक सामान्य कोर शामिल हो जो लचीले हों।

कॉमन कोर में भारत के स्वतंत्रता आंदोलन का इतिहास, संवैधानिक दायित्व और प्रकृति और राष्ट्रीय पहचान के लिए आवश्यक अन्य सामग्री शामिल होगी। व्यावसायिक दक्षता को बढ़ावा देना माध्यमिक शिक्षा का एक अभिन्न अतीत होना चाहिए।

विश्लेषण एवं सुझव- आरएमएसए का लक्ष्य प्रत्येक घर से उचित दूरी पर एक माध्यमिक स्कूल उपलब्ध कराकर पांच वर्ष में नामांकन दर माध्यमिक स्तर पर 90 प्रतिशत तथा उच्चतर माध्यमिक स्तर पर 75 प्रतिशत तक बढ़ाने का है। इसका लक्ष्य सभी माध्यमिक स्कूलों को निर्धारित मानकों के अनुरूप बनाते

Copyright © 2022, Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language

हुए महिला-पुरूष भेदभाव, सामाजिक-आर्थिक और नि:शक्तता-बाधाओं को मिटाते हुए और 2017 तक माध्यमिक स्तर तक की शिक्षा की व्यापक सुलभता की व्यवस्था कराते हुए माध्यमिक शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार करना भी है। लाखों बच्चों को प्रारम्भिक शिक्षा देने के लिए सरकार द्वारा स्थापित राष्ट्रीय माध्यमिक शिक्षा अभियान (RSMA) काफी हद तक सफल रहा है एवं इसने पूरे देश में माध्यमिक शिक्षा के आधारभूत ढांचे को शक्तिशाली बनाने की आवश्यकता उत्पन्न की । मानव संसाधन विकास मंत्रालय के अनुसार- "सर्व शिक्षा अभियान सफलतापूर्वक लागू होने से बड़ी संख्या में छात्र उच्च प्राथमिक कक्षाओं में उत्तीर्ण हो रहे हैं तथा माध्यमिक शिक्षा के लिए ज़बरदस्त मांग उत्पन्न कर रहे हैं।" समाज में शिक्षा का महत्व उतना ही है जितना जीवन जीने के लिए पानी का होना। शिक्षा के उपयोग तो अनेक हैं परंतु उसे सही और नई दिशा देने की आवश्यकता है। शिक्षा इस प्रकार की होनी चाहिए कि एक व्यक्ति अपने परिवेश से परिचित हो सके। शिक्षा हम सभी के उज्ज्वल भविष्य के लिए एक अहम भूमिका निभाती है। हम अपने जीवन में शिक्षा के इस साधन का उपयोग करके आप सफलता के मार्ग में आगे बढ़ सकते है। शिक्षा का उच्च स्तर लोगों की सामाजिक और पारिवारिक सम्मान तथा एक अलग पहचान बनाने में मदद करता है। शिक्षा का समय सभी के लिए सामाजिक और व्यक्तिगत रुप से बहुत महत्वपूर्ण समय होता है, यहीं कारण है कि हमें शिक्षा हमारे जीवन में इतना महत्व रखती है। शिक्षा की मुख्य भूमिका शिक्षा के स्तर को बेहतर बनाना है। विद्याविहीन पशु को ज्ञान का तृतीय नेत्र प्रदान कर विवेकशील बनाना, उसमें अच्छे - बुरे की पहचान तत्पन्न करना, कायदे-कानून की समझ प्रदान करना तथा जीवन में सर्वांगीण सफलता और सम्पन्नता प्रदान करने के लिए संस्कार और सुरुचि के अंकुर उत्पन्न कर उसके व्यक्तित्व निर्माण में ही शिक्षा का महत्त्व है। अम्पूर्णानन्द जी के शब्दों में, 'मन और शरीर का तथा चरित्र के भावों के परिष्कार में ही शिक्षा का महत्त्व है। शरीर और आत्मा में अधिक से अधिक सौन्दर्य और सम्भावित सम्पूर्ण का विकास सम्पन्न करने में ही शिक्षा का महत्त्व है। देश के ग्रामीण क्षेत्रों में शिक्षा का महत्व अधिक देखा गया है। हम अपने अभिभावकों और शिक्षक के प्रयासों के द्वारा अपने जीवन में अच्छे शिक्षित व्यक्ति बनते हैं। वे वास्तव में हमारे शुभ चिंतक हैं, जिन्होंने हमारे जीवन को सफलता की ओर ले जाने में मदद की। आजकल, शिक्षा प्रणाली को ग्रामीण क्षेत्रों में बढ़ावा देने के लिए बहुत सी सरकारी योजनाएं चलायी जा रही हैं ताकि, सभी की उपयुक्त शिक्षा तक पहुँच संभव हो। ग्रामीण क्षेत्रों में लोगों को शिक्षा के महत्व और लाभों को दिखाने के लिए टीवी और अखबारों में बहुत से विज्ञापनों को दिखाया जाता है क्योंकि पिछड़े ग्रामीण क्षेत्रों में लोग गरीबी और शिक्षा की ओर अधूरी जानकारी के कारण पढ़ाई करना नहीं चाहते हैं और जो लोग करना चाहते है उनके पास सुविधा उपलब्ध नहीं रहती की वे अच्छे से अपनी शिक्षा पूर्ण कर पाए।

Copyright © 2022, Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language

संदर्भ सूची

अग्निहोत्री, रविन्द्र (2008):आधुनिक भारतीय शिक्षा, समस्याएँ और समाधान, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी,जयपुर
अग्रवाल, जे. सी.(1971): भारतीय शिक्षा की वर्तमान समस्याएँ, आर्य बुक डिपो करोल बाग, नई दिल्ली।
उपाध्याय, प्रतिमा(2003): भारतीय शिक्षा में उदीयमान प्रवित्तियां,शारदा पुस्तक भवन, इलाहबाद ।
त्यागी, गुरुसरन दास (2007): भारतीय शिक्षा का परिदृश्य,अग्रवाल पब्लिकेशन, आगरा

Copyright © 2022, Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language